ISSN : 2230-8997
वर्ष : 9, अंक 31
जनवरी-मार्च 2017

सहृदय

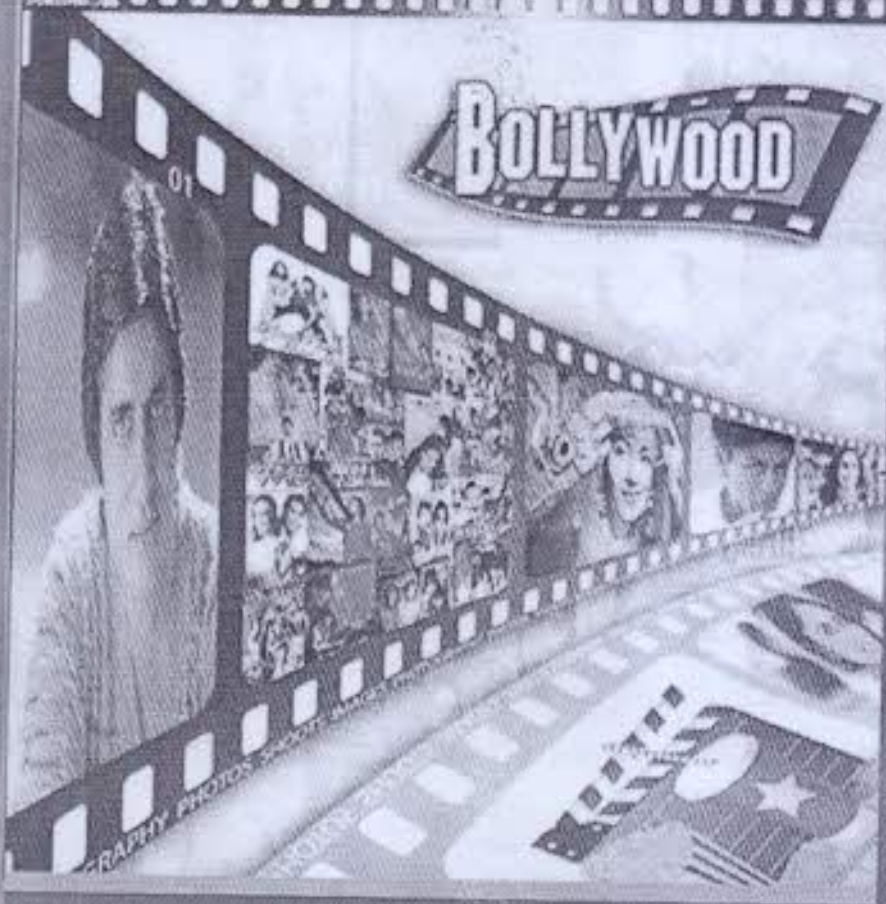

(भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक)

'नव उन्नयन'

नव उन्नयन
विद्याशोधोत्थानम्

विषय–क्रम

हिंदी सिनेमा : समकालीन यथार्थ का परिदृश्य / संपादकीय -- (v)

सिनेमा, साहित्य और समाज के अंतर्संबंध / डॉ. राकेश कुमार शर्मा -- 409

हिंदी सिनेमा : कल, आज और कल / ऋतु फौरे -- 420

हिंदी सिनेमा की कामकाजी एवं सशक्त महिलाएँ / निभा सिन्हा -- 432

वेश्यावृत्ति, हिंदी सिनेमा और साहित्य / आरती रानी प्रजापति -- 437

बाल मनोविज्ञान और सिनेमा / शांभवी -- 444

दलित विमर्श और हिंदी सिनेमा / मनीषा -- 451

खेल, संस्कृति और सिनेमा / जैनेंद्र कुमार -- 455

भोजपुरी सिनेमा और समाज / राजेश कुमार 'मांझी' -- 462

ग्रामीण जीवन पर मीडिया का प्रभाव : 'मुंबई से आया मेरा दोस्त'
फिल्म के संदर्भ में / गोपाल लाल मीणा -- 467

विभाजन की त्रासदी और हिंदी सिनेमा / डॉ. प्रतिभा राणा -- 472

विभाजन की त्रासदी और हिंदी सिनेमा / गुलशन बानो -- 483

हॉरर फिल्मों का कृष्ण-पक्ष / दीपक शर्मा -- 488

सिनेमा और नारी की विभिन्न छवियाँ / डॉ. सुमन कुमारी -- 497

हिंदी फिल्मों के आइने में नक्सलवाद / डॉ. पूनम रानी -- 502

सिनेमा : लोकरंजन बनाम लोकमंगल / डॉ. अनुशब्द -- 505

भारतीय सिनेमा और ऑस्कर / साकेत कुमार भारद्वाज -- 511

सिनेमा की भाषा : कल, आज और कल / डॉ. सतीश शर्मा 'जाफराबादी' -- 515

कला सिनेमा : बाजार और बदलते सरोकार / भावना -- 530

राष्ट्रीय चेतना और हिंदी सिनेमा / मंजुला दास -- 540

फिल्मी स्त्रियों का सच / अर्चना उपाध्याय -- 548

डॉ. अनुशब्द

सिनेमा : लोकरंजन बनाम लोकमंगल

बीसवीं सदी में मानव जाति को मिले कुछ अद्‌भुत वैज्ञानिक उपहारों की अगर बात करें, तो सिनेमा पर चर्चा किए बगैर बात पूरी नहीं की जा सकती। सिनेमा ने न सिर्फ मनोरंजन के क्षेत्र में एक नई क्रांति का आगाज किया बल्कि सामाजिक चेतना को भी एक नया मंच प्रदान किया।

सामान्यतः 1895 में ल्यूमियर बंधुओं द्वारा कंपनी से बाहर निकलते कामगारों को फिल्माने को हम विश्व सिनेमा की शुरुआत मानते हैं। अगस्त और लूईस ल्यूमियर पेशे से रसायनविद थे। उन्होंने सिनेमैटोग्राफ नामक एक यंत्र विकसित किया था जिसकी मदद से 28 दिसंबर 1895 को पेरिस के होटल स्कराईब में कामगारों पर फिल्माई गई अपनी इस लघु फिल्म को एक बड़े पर्दे पर प्रदर्शित किया। लेकिन सिनेमा का बीज Christiaan Huygens ने 1650 में ही 'Magic lantern' नामक एक यंत्र विकसित करके बो दिया था। सिनेमा को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने और उसे विकसित करने में Edward J. Muybridge, Thomas Edison, W.K.L. Dickson आदि अनेक विशेषज्ञों के फिल्म-निर्माण संबंधी नवीन और आवश्यक उपकरणों के आविष्कारों का भी महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप है।

अब बात अगर भारतीय सिनेमा की करें, तो यह अपने सौ साल से ज्यादा के सफर में विश्व पटल पर ना सिर्फ अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब हुआ है, अपितु जनचेतना के एक सशक्त माध्यम के रूप में भी स्थापित हो चुका है। 1896 में ल्यूमियर बंधुओं ने बॉम्बे में अपने द्वारा निर्मित 6 लघु फिल्मों का प्रदर्शन किया था और कहीं-न-कहीं भारत में सिनेमा की नींव रखी थी। ल्यूमियर बंधुओं द्वारा प्रदर्शित लघु फिल्मों को बॉम्बे की जनता ने खूब पसंद भी किया था। बॉम्बे में इन 6 लघु फिल्मों की सफलता ने दूसरे फिल्मकारों जैसे James B. Stewart and Ted Hughes

31/2/06